सामाजिक समूह की विशेषताएँ
(Characteristics of social Group)

जब दो या दो से अधिक व्यक्ति सामान्य हितों के लिए सामाजिक संबंध बनाते है और एक दूसरे को प्रभावित करते है तो वे सामाजिक समूह कहे जाते है। उदाहरणस्वरूप :— परिवार, पड़ोस, स्कूल, कॉलेज एवं व्यावसायिक संघ आदि। सामाजिक समूह की परिभाषा को समझने के पश्चात इनके कुछ विशेषताएँ निम्नलिखित है :—

① व्यक्तियों का संकलन (collection of Individuals) सामाजिक समूह के लिए दो या दो से अधिक व्यक्तियों का होना आवश्यक है। कभी भी अकेला व्यक्ति समूह का निर्माण नहीं कर सकता। अतः समूह की आधारभूत विशेषता एक से अधिक व्यक्तियों का संकलन कहा जाता है।

② मूर्त संगठन (Concrete organization) :— सामाजिक समूह को व्यक्तियों का संकलन कहा गया है। बिना दो या दो से अधिक व्यक्तियों के समूह की कल्पना नहीं की जा सकती। व्यक्तियों को प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है तथा स्पर्श किया जा सकता है। यानि व्यक्ति मूर्त रूप है। अतः समूह एक मूर्त संगठन है।

③ सामाजिक संबंध (social Relationship) :— सामाजिक समूह के लिए व्यक्तियों के बीच सामाजिक संबंध का होना नितान्त आवश्यक है। यह संबंध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार से हो सकते है। प्रत्यक्ष संबंध प्रायः छोटे आकार

वाले समूह में होते है। जैसे - परिवार में पति-पत्नी व बच्चों आदि के बीच का संबंध प्रत्यक्ष है। अप्रत्यक्ष संबंध बड़े आकार के समूह में पाये जाते है, जैसे — राजनीतिक दल।

(4) सामान्य हित (Common Interest):— समूह के निर्माण हेतु व्यक्तियों में सामान्य हित या उद्देश्य का होना आवश्यक है। यह हित या उद्देश्य ही व्यक्तियों को समूह के निर्माण हेतु प्रेरित करता है। समूह में व्यक्तियों के बीच जो सामाजिक संबंध बनते है उसका आधार सामान्य हित ही है। अतः बिना स्वार्थ या हित के समूह का निर्माण सम्भव नहीं है।

(5) सामाजिक लक्ष्य (Social Goals):— सामाजिक समूह के निर्माण के लिए न सिर्फ व्यक्तिगत हित या लक्ष्य की आवश्यकता है, बल्कि सामाजिक हित या लक्ष्य की आवश्यकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि असामाजिक लक्ष्य समूह का निर्माण नहीं कर सकता। कुछ अपराधी अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए संगठित होते है, सामाजिक लक्ष्यों या संबंधों की स्थापना करते है एवं एकता भी बनाए हुए रखते है पर इसे समूह नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इसका लक्ष्य समाज विरोधी है। समूह के लिए सदा लक्ष्य का सामाजिक होना अनिवार्य है।

(6) सहयोग (Co-operation):— सामाजिक समूह के लिए व्यक्तियों में परस्पर सहयोग का होना

अनिवार्य है। इसके अभाव में किसी भी समूह का अस्तित्व नहीं रह सकता। इसकी मात्रा कम या ज्यादा हो सकती है परन्तु यह अनिवार्य है। जैसे — परिवार रूपी समूह में सदस्य एक साथ रहने के लिए भोजन बनाने के लिए, अर्थ उपार्जन के लिए और इसी तरह अन्य कार्यों के लिए सहयोग करते रहते हैं। प्रत्येक समूह का अस्तित्व सहयोग पर आधारित है।

(4) प्रभाव : Influence :— सामाजिक समूह के व्यक्तियों में एक दूसरे को प्रभावित करने की विशेषता होती है। क्योंकि सदस्यों में एक दूसरे को अपने विचारों, भावों एवं कल्पनाओं का आदान-प्रदान होता रहता है। अतः समूह के प्रत्येक सदस्य एक दूसरे से प्रभावित होते हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

(5) निश्चित संरचना (Definite Structure) :— सामाजिक समूह की एक निश्चित संरचना होती है। इस संरचना में प्रत्येक व्यक्ति का एक पद होता है और उससे संबंधित कार्य होते हैं। इस प्रकार पद और कार्य के [illegible] विशेषता है जिसे निश्चित संरचना कहते हैं।

(6) प्रतिमान (Norms) :— प्रत्येक सामाजिक समूह का अपना प्रतिमान - नियम एवं कानून होता है जो प्रतिमान ऐसे होते हैं जो व्यक्ति के आचरण को प्रभावित व निर्देशित करते हैं।

(7) स्थायित्व (Permanency) :— सामाजिक समूह एक स्थायी [illegible] यद्यपि इसका निर्माण व्यक्तियों से हुआ [illegible]
[illegible]